

बिसमिल्लाहिरहमानिररहीम

दुर्दै यस्सीर

यानी

मुमताज़ उस्ताज़ व मुरब्बी व साहिबे नज़र आलिमे दीन

हज़रत मौलाना जुलफ़कार साहब रह.

साबिक़ शैख़ुल हदीस जामिआ फ़लाहै दारैन

तरकेसर गुज़रात के मुख़्तसर हालात ।

मअ पेश लफ़ज

मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रहमानी मद्जिल्लहुल आली

मुरतिब व नाशिर

मुफ़्ती मोहम्मद जुनैद बिन मौलाना जुलफ़कार अहमद फ़लाही

दुरे यसीर

यानी

मुमताज़ उस्ताद व मुरब्बी व साहिबे नज़र आलिमे दीन

हज़रत मौलाना जुलफ़कार साहब रह.

साबिक़ शैख़ुल हदीस ज़ामिआ फ़लाहै दारैन तरक़ेसर
गुज़रात के मुख़्तसर हालात ।

मअ पेश लफज़

मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रहमानी मदज़िल्लहुल अली

मुरतिब व नाशिर

मुपिती मोहम्मद जुनैद बिन मोलाना जुलफ़कार अहमद फ़लाही
पलासिया मस्जिद, पलासिया स्कॉयर,

एम.जी. रोड़, इन्दौर (एम.पी)

juned313@gmail.com

Mo. 09425072454

कलिमाते तशक्कुर व एअतिज़ार

हज़रत वालिद साहब के मुतअल्लिकीन व मुहिब्बीन से बड़ी तअदाद में तज़ियत नामें, इदारों की तज़ियती तजावीज़ फोन या खुतूत की सूरत में हमें मोसूल हुई, तकाज़ा तो यही था कि वालिद साहब की रिवायात बरकरार रखते हुवे बर वक्त जवाब दही से शुक्र गुज़ारी की जाती, लेकिन ना मुसाइद हालात, रंज़ूर तबिअत, और मसरूफियात की हमा हमी की वजह से फरदन फरदन शुक्र गुज़ारी के खुतूत इरसाल ना हो सके। इस पर हम नदामत के साथ माज़रत खवाह हैं। और उन सभी मुहिब्बीन के ममनून हैं कि ग़म व अलम के इस तूफ़ान में उन्हो ने हमारे ग़म में शरीक हो कर तसल्लि का सामान किया।

इसी तरह हम उन तमाम मशाइख़, अरबाबे जामिआत, मदारिस व मकातिब नीज़ अइम्म ऐ मसाजिद के मशकूर हैं, जिनहोंने इस ख़बर से ग़मगीर हो कर अपने अपने हलक़ ऐ असर में ईसाले सवाब का एहतमाम किया, और पस मानदगान के लिए सब्र व अफियत की दुआ की, अल्लाह तआला तमाम हज़रात को अच्छा बदला अता फरमाए।

इसी तरह वह मुहिब्बीन जो दूर व दराज़ से सफर की मशक्कतें बरदाश्त करके हमारी अशक़ शोई के खातिर घर तक पहुंचे और अहले ख़ाना को तसल्ली दी, हम उन सभी के तहे दिल से ममनून हैं अल्लाह ताआला उन्हें इन कुरबानियों पर अजरे जज़ील अता फरमाए। आमीन!

इस वक्त शरमिन्दगी के ग़ायत अहसास के साथ मैरा रुवां रुवां शुक्र गुज़ार है मोहसिन व मुरब्बी मुश्फिक़ उस्ताद हज़रत मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह साहब रहमानी दामत फुयूज़ुहुम की पिदराना शफ़क़तों का कि वालिद साहब की ज़ात वाला सिफ़ात के सिलसिले में मेरी इन निगारिषात को उनहो ने अपनी बे पनाह मसरूफियात के बावजूद पढ़ा, कीमती इस्लाहात फरमाकर इसे सही रंग व रूप अता किया, इसकी कम्पोज़िंग का अहतमाम कराया और उस पर अपना बेश कीमत मज़मून भी इनायत फरमाया, फजज़ाहुमुल्लाहु अहसनलजज़ा।

वालिद माजिद के साया ऐ शफ़क़त से महरूमी पर उसताद मोहतरम की यह नवाज़िशात मेरी इल्मी ज़िन्दगी के लिए इन्शाअल्लाह तआला मज़बूत सहारा साबित होंगी।

मशकूर व ममनून

जुनैद अहमद व सुहैल अहमद
अबना ए मौलाना सय्यद जुलफकार अहमद रह.

पेश लफज

दारुल ऊलूम माटली वाला गुजरात में इस्लामी फिकह एकेडमी (इण्डिया) का सातवां फिकही सेमीनार 1995 में मुनअकिद हो रहा था, इस प्रोग्राम की निसबत से पहली बार इस हकीर का गुजरात का सफर हुवा, सेमीनार से दो दिनों पहले ही वहां पहुंचना हुवा और इलाका के अहम मदारिस में जाने का मोका मिला, इन्ही दरसगाहों में एक जामिआ फलाहे दारैन तरकेसर (गुजरात) भी है, यहां जब हाजिरी हुई तो दो बुर्जरगों को मौजूद पाया, एक हजरत मौलाना अबरार साहब धुलयवी रह., जो उस वक्त जामिआ हाजा के शैखुल हदीस थे अफसोस कि पचास साल से कुछ ऊपर उमर में ही उनकी वफात हो गई, दुसरे बुर्जग उनसे भी ज़ियादा सीधे साधे, गुफ्तगू में मोहतात्, लब व लहजे में नरम, खिला हुवा रंग, लेकिन चेहरे पर चेचक के निशानात और हाथ में तसबीह, बड़ी मोहब्बत और शफक्त से मिले और चाय से ज़ियाफत फरमाई, यह थे हजरत मौलाना जुलफकार अहमद साहब रह. और यह थी उनसे पहली मुलाकात, इस मुलाकात में कुछ ज़ियादा गुफ्तगू नहीं हुई।

इस के कुछ अरसे बाद जामिआ के उस्तादे अदब मौलाना मोहम्मद हबीबुर्रहमान साहब नदवी हैदराबाद तशरीफ लाए और जामिआ के जिम्मेदारों की तरफ से मुझे फ़लाहे दारैन में मुहाजिरा और तलबा के सालाना प्रोग्राम की सदरत की दाअवत दी, यह हकीर हाजिर हुआ, "जदीद मसाइल और उसका हल" पर मुहाजिरा हुआ और अगले दिन जामिआ के प्रोग्राम में खिताब।

हजरत मौलाना सय्यद जुलफकार अहमद साहब उस वक्त जामिआ के शैखुल हदीस थे, वह इन दोनों प्रोग्रामों में शरीक रहे, मुझे खुद उनकी इस खुरदनवाज़ी से शरमिन्दगी होती थी, लेकिन उन्हो ने ना सिर्फ़ दोनों खिताब में शिरू से आखिर तक शिरकत फरमाई, बलके

आखिर में दुआ कराने से पहले बे हद मोहब्बत के अलफाज़ भी कहे, मेरे लिए उनका यह मुश्फ़क़ाना बरताव सिर्फ़ मर्सरत हि का बाइस नहीं था; बलके एक सबक़ भी था कि बड़ों को अपने छोटों के साथ किस तरह का बरताव करना चाहिए।

मौलाना ने ग़ालिबन अगले हि साल अपने फ़रज़ंद अरज़मंद मौलाना मोहम्मद जुनैद फ़लाही सल्लमहू को मेरे पास भेजा, मैं उस वक़्त जिस मदरसे में खिदमत करता था, वहां वह वक़्त दाखिले का नहीं था और मैं खिलाफ़े ज़ाब्ता काम से हत्तल मक़दूर बचने की कोशिश करता हूँ, इस लिए मैं बहुत परेशान हुआ और मौलाना से सूरते हाल बयान की कि अब दाखिले का वक़्त नहीं रहा, मौलाना ने फ़रमाया कि मैं ने उसे मदरसे में दाखिले के लिए नहीं भेजा है, आपकी सोहबत में रहने के लिए भेजा है, इस लिए चाहता हूँ कि आपके साथ रहे; चुनान्चे अज़ीज़ी सल्लमहू बड़ी सआदत मंदी के साथ छः सात माह इस हकीर के साथ रहे और मैं जो इल्मी काम उनके हवाले करता रहा, तुन्दही के साथ उसको अंजाम देते रहे, उनको शायद मुझ से कुछ ज़ियादा फायदा नहीं पहुंचा; लेकिन मुझे बड़ा नफ़ा यह हुआ कि एक बुर्ज़ग़ यानी उनके वालिद माजिद की शफ़क़त व मोहब्बत और बड़ गई और हुस्ने ज़न में भी इज़ाफ़ा हुआ, यही हमारे लिए बड़ी मता ए गिरा माया है।

चुनान्चे जब मअहद का कियाम अमल में आया तो हमने अपने कुछ बुर्ज़ग़ों को दुआ के लिए खुतूत लिखे, सय्यदी व सनदी हज़रत मौलाना सय्यद अबुलहसन अली नदवी रह. के ब शमूल अकसर अकाबिर उलमा के होसला अफ़ज़ा जवाबात वुसूल हुवे, उन खुतूत ने जो होसला बड़ाया, उनही में एक मकतूब हज़रत मौलाना सय्यद जुलफ़कार रह. का था, उस गिरामी नामें में एक एसी बात थी, जिस को एक बालिग़ नज़र, ज़माना सनास और तज़रबे कार शख्स ही लिख सकता था, मौलाना ने मअहद के कियाम पर मर्सरत का इज़हार करते हुए जो कुछ लिखा, उसका खुलासा यह था कि: "यह बात बहुत बहतर है कि आप ने इसको अपने ज़ेरे एहतमाम काम किया है और आइंदा भी इसको अपनेही ज़ेरे इंतज़ाम रखें, ताकि इस इदारे में इल्म व तहकीक के काम की तरफ़ अब्वलीन तवज्जोह बाकी रहे और तअमीरात वगैरह को

मक़सद ना बना लिया जाए” ।

मौलाना की इस बात ने मेरे दिल का गुबार धो दिया; कियों कि में अंदर से सख्त तज़बज़ुब का शिकार था और सोचता था कि कहीं इन्तज़ाम व इनसिराम की जुम्मेदारियां मुझे इल्मी कामों से दूर ना कर दें और इस इदारे का क़ियाम बजाए फायदे के नुक़सान का सबब ना बन जाए, फिर मअहद के क़ियाम के बाद से ही मौलाना फलाहे दारैन के मुमताज़ फुज़ला को मअहद में मज़ीद कसबे इल्म का मशवरह दिया करते थे, इसी लिए अबतक तक़रीबन हर साल ही मअहद में वहां के एक दो फुज़ला का दाखिला होता रहा है ।

2002 में जब इस्लामिक फिक़ह एकेडमी के बानी व जिम्मेदार हज़रत मौलाना काज़ी मुजाहिदुल इस्लाम साहब कासमी रह. की वफात के बाद एक नए इन्तज़ामी ढांचा की तशकील अमल में आई और बुर्ज़गों ने ज़नरल सेकेटरी की जुम्मेदारी इस हकीर से मुतअल्लिक की तो इस वक़्त एकेडमी के खिलाफ ग़लत फहमियों की घटाएँ छाई हुई थीं और गुज़रात के भी बहुत से उलमा इस से मुतअस्सिर थे; चुनान्चे राकिमुलहुरूफ ने जिम्मेदारी सम्माल लेने के बाअद एकेडमी के सदर हज़रत मौलाना मुफ़्ती मोहम्मद ज़फीरुद्दीन साहब और नायब सदर हज़रत मौलाना बुरहानुद्दीन साहब की क़ियादत में एक वपद के साथ देवबन्द और सहारनपूर का सफर किया फिर एकेडमी के रुक्न हज़रत मौलाना मोहम्मद एहमद देवलवी (मोहतमिम जामिआ ऊलूमुल कुरआन जम्बुसर) के साथ पुरे गुज़रात का सफर किया यह असफार अपने मक़सद के एअतबार से बड़े कामयाब रहे, इस सिल सिले में राकिमुल हूरुफ की हाज़री फलाहे दारैन तरकेसर में भी हुई, यहां मौलाना ने तमाम असातज़ ए किराम को जमा फरमाया, इन दिनों इत्तफाक़ से मौलाना मोहम्मद खलील रावत साहब भी आए हुवे थे, वह भी शरीक रहे और मुझ से ख़िताब करने की खुवाहिश फरमाई, में ने एकेडमी के क़ियाम का पस मंज़र, एकेडमी का तरीक़ ए कार और उसके फिक़ही सेमीनार वग़ेरह पर तफसील से गफ्तगू की और सवालात के जवाबात भी दिए, मौलाना ने पूरी बात तवज्जोह से समाअत फरमाई और फिर उसकी भरपूर ताईद और तहसीन भी की ।

मौलाना की शफक़त उनके अवामी असरात और उनकी

इन्तज़ामी लियाक़त का एक खूशगवार तज़रबा एकेडमी के सोलहवें सेमीनार मुनअकिदह बुरहानपूर में हुआ, यह सेमीनार मौलाना की रियासत मध्य प्रदेश में हो रहा था और उसकी दाअवत देने वालों में मुहिब्बी फिल्लाह मौलाना मोहम्मद रहमतुल्लाह साहब कासमी और अज़ीज़ी मौलाना मोहम्मद जुनेद फलाही सल्लमहू पैश पैश थे, यह सेमीनार अपने हुस्ने इन्तज़ाम के एअतबार से गुज़िश्ता सेमीनारों पर फाइक़ था, जिस में मौलाना की सरपरस्ती और उनके असरात का बड़ा दखल था, इस मोक़े पर मौलाना ने खुतब ए इस्तिक्बालिया पेश फरमाया, यह खुतबा ना सिर्फ़ इल्मी, तारीखी, बल्कि अदबी हैसियत से भी एक शाहकार था, जिसे बे हद पसंद किया गया और हर तरफ से तहसीन व आफरी की सदा बुलन्द होने लगी, मौलाना के तदरीसी कमालात का इल्म तो पहले से था इस मोक़े से पहली बार आप के बुलन्द अदबी ज़ोक़ का भी अंदाज़ा हुआ।

मौलाना से आखिरी मुलाक़ात एकेडमी के 19 वें फिक़ही सेमीनार मुनअकिदह : (12-15 / फरवरी 2010 ई) की मुनासिबत से होने वाले सफ़र गुज़रात में हुई, इस सफ़र में यह हकीर जामिआ तालिमुद्दीन ढाबैल से होते हुवे फलाहे दारैन तरकेसर पहुंचा, हुस्ने इत्फाक़ कि हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह साहब कापोदरवी भी मौजूद थे, हस्बे मामूल हज़रत मौलाना जुलफ़कार साहब की शफ़क़त और बे करां खुर्द नवाज़ी से शरमिन्दा होता रहा, बाद नमाज़े मगरिब जामिआ की मस्जिद में इस हकीर का खिताब रखा गया, खिताब से पहले मेरे तआरुफ़ के लिए मौलाना खुद माइक़ पर तशरीफ़ लाए, मेने अर्ज़ किया की आप इसकी ज़हमत ना फरमाएँ, जामिआ में मेरे भी मुतअदद् शागिरद हैं, उनमें से किसी से तआरुफ़ करवा दें, अगर ज़रूरत मेहसूस करें, मगर मौलाना ने एक ना सुनी और फरमाया कि मैं खुद तआरुफ़ कराऊंगा, फिर तआरुफ़ में भी बे हद हुस्ने ज़न का इज़हार फरमाया, मेने अपनी तक़रीर शुरू करने से पहले दरखास्त की कि आप आराम के लिए तशरीफ़ ले जाएँ, मगर मेरी इज़ज़त अफ़ज़ाई के लिए मौलाना शुरू से आखिर तक बैठे रहे, वाकिअ है कि मौलाना के अंदर खुर्द नवाज़ी और छोटों के साथ शफ़क़त की जो केफ़ियत देखी, शायद उस दर्जेकी किसी आलिम में नही देखी।

मौलाना को अल्लाह ताआला ने गेर मामूली तदरीसी सलाहियत, सलीक ए तरबियत और शफकत व होसला अफज़ाई के वाफिर ज़ज़बे से नवाज़ा था, इस का अंदाज़ा मुझे उनके शार्गिंदों से मिल कर हुआ, औलाद को अपने अपने वालिदैन् से फितरी मोहब्बत होती है, इस लिए सआदत मंद अवलाद बहर सूरत अपने मां बाप की तअरीफ करती है, मुरीद अपने शैख को सिर्फ अकीदत की आंखों से देखता है, और तंकीद की आंखों पर पट्टी बांध कर ही उस कूचे में कदम रखता है, लेकिन शागिर्द का मआमला अपने उस्ताद के साथ यह नहीं होता; कियों कि आंखें बंद करके इल्म की वादियां ते नहीं की जा सकतीं, इसी लिए जब एक शागिरद अपने उस्ताद का सना ख्वां होता है तो उसमे कम ही मुबालगा होता है, मौलाना के शागिरद को मेने उनका मददाह और बे हद मोअतरिफ पाया, वह उनकी तदरीस से भी मुतअस्सिर थे, तरबियत से भी और खास तौर पर उनके हुस्ने अखलाक और हुस्ने सुलूक से भी; इस लिए मेरे दिल में मौलाना के लिए बड़ी मोहब्बत और अकीदत का जज़बा था।

वह नजीबुतरफैन सादात में थे, एक मुत दय्यिन और दीन और इल्मे दीन से मोहब्बत रखने वाले घराने में आंखें खोलीं, कम उमर मे ही वालिदा और बहन की शफकत से मेहरूम होगए, इस शिकस्ता दिली और बे सहारगी के तर्जबे ने इन्हें शफकत व मोहब्बत और सब व तहम्मूल का पेकर बना दिया था, देवबन्द से तालीम मुकम्मल फरमाई, मौलाना हुसैन अहमद मदनी की खुसूसी शफकतें उन्हें हासिल थी, वह 14/दिसम्बर 1940 ई को नरवर मे पैदा हुवे, और 1967 ई में दारूल उलूम देवबंद से फरागत हासिल की, अभी तालिबे इल्मी का मरहला ते ही हुआ था कि देवबंद में जामिआ फलाहे दारैन तरकेसर की तरफ से परवान ए तदरीस आगया और हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह साहब कापोदरवी की निगाहे जोहर शनास ने आपकड़ा, वहीं से तरकेसर के लिए आजिमे सफर हुवे, यहां तक कि 43 साल इस्लामी उलूम का दरस देते हुवे 5/अप्रैल 2010 ई को आलमें बका की तरफ रुखसत हुवे, इस दौरान मुतवस्सितात से लेकर बुखारीशरीफ तक दरसे निज़ामी की अकसर किताबों का दरस दिया, बैरूनी मुल्क से भी मुतालबा आया

मगर पाए इस्तकामत में कोई लरज़िश पैदा ना हुई, इस हकीर को वफात के एक घंटा अंदर ही इत्तिला मिल गई थी और अलालत की इत्तिला पहले से थी, ऐसा रंज हुवा जो अपने किसी बुर्जुग खानदान की वफात पर हो सकता है, खास कर साहिबज़ादा ए अरजमंद अजीज़ी मुफ्ती मोहम्मद जुनैद फ़लाही—बारकल्लाहु फी हयातिह व ख़िदमातिह व नफअ बिहिलमुस्लिमीन—के खयाल ने बे चैन करदिया और फोन पर मुसलसल कोशिश के बावजूद उस वक़्त उनसे राबता ना होसका ।

राकिमुल हुरुफ इस हादिसा के कुछ ही अरसा बअद बरतानिया के सफर पर गया, वहां मौलाना के मुतअल्लिकीन व मुसतफीदीन ने एक खुसूसि प्रोग्राम मौलाना की शखसियत पर रखा, जिन में सरे फहरिस्त मौलाना बशीर एहमद साहब ख़ानपूरी(साबिक नाइब मोहतमिम जामिआ फलाहे दारेन) थे, उनके अलावा मौलाना के बअज़् रुफ़का और अकसर तलामिज़ा शरीक थे, मेने अपने खिताब मे तजवीज़ पेश की कि आप हज़रात मौलाना की शखसीयत के मुखतलिफ पहलुओं पर मज़ामीन का मजमुआ मुरत्तब करें और मौलाना की तहरीरों को भी यकजा करें, दिल मे बार बार दाईया पैदा होता रहा कि काश ! मौलाना की हयात पर कोई मुखतसर या तफसीली तहरीर बरवक़्त आजाती, कि इसी दरमियान अजीज़े गिरामी क़दर मौलाना मोहम्मद जुनैद फलाही सल्लमहू का मक़ाला बलकि रिसाला पहुंचा, इस से बड़ी खुशी हुई और एक ही मजलिस में पूरा रिसाला पढ़ा गया, अब एक सआदत समझकर इस रिसाले पर यह सतरें लिख रहा हुं, यह रिसाला अपने इखतिसार के साथ साहिबे तज़क़िरा के हालात में से मोअल्लिफ के हुस्ने इन्तखाब का मज़हर है, उम्मीद है कि वह इस "मतन" की शरह भी लिखेंगे और अपने वालिद माजिद पर तफसील से क़लम उठाएंगे, यही तवक्को उनकी रूहानी अवलाद यअनी दुनिया भर में फैले हुए उनके बे शुमार शागिरदों से भी है ।

वाकिआ है कि हज़रत मौलाना जुलफ़कार साहब रह. निहायत कामयाब मुदर्रिस, मुखलिस मुरब्बी, शखसियत की तअमीर में महारत के हामिल, बुलंद अखलाक़, बुलंद निगाह, मोहब्बत व शफ़क़त के पैकर, साहिबे ज़ोक् व साहिबे क़लम आलिमे दीन, उस्ताद दाई और मुरब्बी थे, और उनसे

इस्तफादा करने वाले तलबा उनके अंदर बाप की शफ़क़त और माँ की ममता को इस तरह पाते थे कि घर की जुदाई का अहसास कम हो जाया करता था, इस लिए उनकी पाकिज़ा और मिसाली ज़िन्दगी पर मुरत्तब होने वाली यह तहरीर युं तो तमाम ही लोगों के लिए मुफ़ीद है; लेकिन खास तोर पर उल्मा और दीनी दरसगाहों के लिए तो चश्में कशा है, वह इस आइने में अपनी तसवीर देख सकते हैं, और साहिबे तज़किरा की ज़िन्दगी से सबक़ हासिल कर सकते हैं कि एक कामयाब उस्ताद, मक़बूल मोअल्लिम और बा फ़ैज़ मुरब्बी की ज़िन्दगी केसी होनी चाहिए। दुआ है कि अल्लाह तआला साहिबे तज़किरा की तवील दीनी व इलमी खिदमात को कुबूल फरमाए और नई नसल को उनके नक़शे क़दम पर चलने का होसला बख़्शे। आमीन

ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी

नाज़िम अलमअहदुल आली अलइस्लामी हैदराबाद
25/रजबुल मुरज्जब 1431 हि. 8/ जुलाई 2010 ई
हसनी जमाल का अकस जमील

ग़ालिबन हज़रत अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह. के ताज़ियती इजलास में अल्लामा इक़बाल रह. ने यह शअर पढ़ा था
हज़ारों साल नरगिस अपनी बे नूरी पर रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदवर पैदा

डॉक्टर राहत इन्दौरी फरमाते हैं कि नरगिस एक फूल है जो आम्मतन पूरा नहीं खिलता और जब मुरज़ाता है तो उस में से पानी निकलता है बरसों में कभी कोई फूल पूरा खिल जाता है तो वह एक बड़ी आँख की शकल इख्तियार कर लेता है, इसी से आँख की एक सिफ़त नरगिस होना माखूज़ है।

इन्सान तो दुनिया में बहुत आते और चले जाते हैं, इन्सान में जितनी सिफाते खैर अल्लाह रब्बुल इज़ज़त ने वदिअत फरमाई हैं, उन सब का सिफाते शर पर ग़ालिब होकर उसके पैकर में जलवगर होना और पूरी आब व ताब के साथ ता दमें हयात इसी हाल में बाकी रहना ख़ाल ख़ाल होता है, कि शोहरत, इज़ज़त, दौलत, मरज़, सहत, मौसम,

बादेमुवाफिक और बादमुखालिफ का किसी इन्सान की केफियाते हसना पर कोई असर ना हो, एक ही तरज अंदाज बाकी रहे :

ई सआदत बजोरे बाजू नैस्त

ता ना बखशद खुदा ए बखशिन्दह

इस बखशिश में उसकी कसरे नफसी का बहुत बड़ा दखल होता है, जैसा कि इरशाद नबवी है :

“मनतवाजअ लिल्लाहि रफअहुल्लाहु”

जो अल्लाह के लिए तवाजोअ इखितयार करता है, अल्लाह उसको बुलन्द करते हैं।

“रफअहुल्लाह” की शरह में बाज़ शारिहीन ने **“व रफअना लक जिकरक”** से मदद ली है, जो कसरे नफसी की शान पैदा करलेता है, अल्लाह उसे उन सिफाते हमीदा से दायमी तौर पर आरास्ता फरमाते हैं, जो चहारदंग आलम में इन्सानी कुलूब में उसे बुलन्द मुक़ाम दिलाती हैं। उसमें उसके ख़ानदानी बुर्जगों की सालहिय्यत, नेको कारी, इबादत, इन्सान दोस्ती, इल्म और एहले इल्म के अदब और मोहब्बत का भी बड़ा असर होता है।

अल्लामा इब्ने खलदून रह. ने किसी जगह लिखा है कि एक शख्स की नेको कारी का असर उसकी पांच नसलों तक चलता है, यअनी मुसलसल नेको कार पैदा होते रहते हैं और **“बा अदब बा नसीब”** मशहूर मसल है, जिस के यहां जितनी इकीदत व मोहब्बत और अदब का सरमाया होता है, वह इसी लिहाज़ से खैर की बातों में बका व दवाम पाता है।

शिकिस्ता दिली का भी असर होता है टूटे दिल पर रब्बे कायनात की खुसूसी निगाहे लुतफो करम रहती है, इसी लुतफो अता का नज़ारा अल्लामा इक़बाल रह. की हकीम निगाह ने किया तो तड़प कर बोले :

तू बचा बचा के ना रख इसे तेरा आईना है वह आईना

कि शिकस्ता गर होतो अजीज़ तर है निगाहे आईना साज़ में

‘निगाहे आईना साज़’ में यह टूटा हुआ इन्सान का दिल जो ग़ैरुल्लाह के मराहिम से खाली : बल्के मराहिम की उम्मीद से भी खाली होता है, महबते रहमते इलाही बन जाता है, यकीनन यह

बड़ी नेअमत ही थी, इसी लिए रब्बे जुलजलाल ने अपने मेहबूबे जुल कमाल स.अ.व.स को बचपन ही में शिकसता दिली अता फरमादि थी :

पैदा हुवे तो बाप का साया उठा लिया
घुटनों चले तो दादा अदम को रवाना था
चलने लगे तो मादर व अम हो गए जुदा
हर एक साया सर से उठता ही चला गया
साए पसंद आए ना परवर दिगार को
बे साया करदिया गया उस साया दार को

यह शिकस्ता दिली पर रहमते इलाही की बारिश थी, जिस ने अरब के उस यतीम को आलम का "दुर्रे यतीम" बना दिया था।

हज़रत मौलाना सय्यद जुलफुकार एहमद साहब कासमी नरवरी रह. जिन को हम किबल ए वालिद साहब कहते हुवे नाज़ करते थे और अब हमारा वह मता ए नाज़ जात रहा—उनही में हैं, उनकी इब्तिदाई ज़िन्दगी के पस मंज़र को मलहूज़ रखते हुवे उन्हें में आजका "दुर्रे यसीर" कह सकता हूँ वह तेरह साल की उर्म में माँ के साय ए आतिफत से महरूम हो गए थे और चौदा साल की उर्म में इकलोती बहन ने भी भाईयों को बिलकता छोड़ कर दारे बका की राह ली थी, यह वह ज़ाहिरी अवामिल हैं, जिन्होंने किब्ला वालिद साहब रह. को शफक़तों का पैकर, हर दिल अज़ीज़ मोहसिन खास व आम, बे सहारों के लिए एक साया ए आतिफत, इस्लामी फ़िक्र का तरजुमान, इल्म का मरकज़ और रुहानियत का पैकर बनादिया था।

आइये कदरे तफसील से उन अवामिल का जाइज़ा लें:

1858 ई की फेसला कुन जन्ने आज़ादी ना कामी पर मुनतिज़ हुई और बैरुनी हुकमरानों के गैज़ व ग़ज़ब और सजा ए दारो व रसन का इबरत नाक दौर तरके में छोड़ गई, मुल्क का बेशतर इलाका लहू के समन्दर में गोता ज़नी कर रहा था और मुल्क की फिज़ा सहमी हुई थी, लेकिन दो तरफ से पहाड़ और तीसरी तरफ सिंध नदी से घिरे हमारे इस क़रिआ 'नरवर' में मुसलमान पुर सुकून ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, नरवर से दस किलो मीटर के फासले पर नदी के किनारे आदिवासियों का क़रिआ 'ईरावन है, चाश्त का वक़्त था, धूप तेज़ हो रही थी, एक बुढ़ा आदिवासी

नरवर के ज़मींदार सादात की हवेली के सामने बा अदब खड़ा एक खबर देने के लिए बे चैन था, जेसे ही घर के बुर्जग का सामना हुआ, उसने अर्ज किया : हमारे गांव में कल शाम आपके धरम गुरु आगए हैं, हमने रात में उनकी सेवा की, लेकिन वह तो महान पुरुश (अज़ीम इन्सान) मालूम होते हैं, आप उन्हें अपने यहां ले आएं, यह सुनते ही सादात की मिसाली मेहमान नवाज़ी का जज़बा जोश में आगया, फोरन बग्गी तयार की गई और उन बुजुर्ग से मुलाकात और उन्हें अपने यहां लाने के लिए घोड़े सड़क पर दोड़ने लगे, शाम होते होते सादात के इस घर में बहादुर शाह ज़फ़र मरहूम के खानदान के एक फर्द—जो हाफिज़ व आलिम और रूहानी निसबतों से आरास्ता थे—क़दम रंजा फरमा थे ।

तीन रोज़ तक एक ज़मींदार खानदान जेसी मेज़बानी कर कसता था वह की गई, तीन रोज़ बअद उस गैरत मंद मेहमान ने फरमाया कि इस्लाम में मेहमानी तीन रोज़ है, गो मेरे लिए अभी हालात ना साज़ गार हैं, ऐसे वक़्त में आपने मुझे पनाह दी है, आज मेरे पास आपकी मेज़बानी के जवाब के लिए जाहिरी असबाब से कुछ नहीं है, लेकिन यह मेरी गैरत के खिलाफ है कि मैं इस तरह एक तरफा इन्तफाअ करूं, मैं हाफिज़े कुरआन हूं, आप अपने घर का कोई फर्द मुझे दें, जिसे मैं कुरआन पाक हिफज़ करा के आपकी इनायत का बदला चुका सकूं, चुनान्वेह सब से झोटे भाई वली मोहम्मद को हिफज़ के लिए उनके हवाला कर दिया गया, मेज़बान के शाहाना मिज़ाज और इतने बड़े एहसान को देखते हुवे फोरी तौर पर रिहाइश के लिए आठ कमरों पर मुशतमिल पत्थर की एक इमारत तयार की गई, जिस से मुत्तसिल कुआं बनवाया गया, नमाज़ के लिए मस्जिद बनाई गई, चहल क़दमी के लिए बागीचा, जिस में इलाक़े के सभी फलों के दरख़्त थे चाश्त और कभी जोहर पड़ने के लिए अलग मस्जिद गुस्ल के लिए चोकोर दो मंजिला इमारत से मुज़य्यन तालाब बनाया गया ।

इस तरह आठ साल रह कर उन्होंने हिफज़ कलाम पाक और दिगैर फारसी और कुछ अरबी किताबों की तकमील कराई, चूंकि वह खुद साहिबे निसबत थे; इस लिए निसबतें भी मुनतक़िल फरमाईं,

आठ साल बाद जब उन्होंने वापसी की खुवाहिष की तो चालिस अफराद के साथ जिन में उनके शागिरदे रशीद भी शामिल थे हज्जे बैतुल्लाह का सफर कराया और सामाने सफर के साथ साथ तहाइफ का भी नज़म किया गया, जो उस वक्त के खुदामे हरमैन को पहुंचाए गए, इसी सफर में खुदामे हरम की तरफ से गिलाफे काअबा का एक गज़ लम्बा टुकड़ा बतूरे जवाबी तोहफा इनायत किया गया, जो आजतक इस खानदान में बतूरे तबर्कूक मौजूद है।

हाफिज़े कुरआने करीम और उल्माए दीन की इस क़र्द शनासी, खिदमत और उनके साथ मोहब्बत व अक़ीदत ही का असर है कि तब से आज तक नसलों में हुफ़ाज़ व उल्मा और असहाबे निसबत होते चले आए हैं, (अल्लाह ताआला इस बरकत को देर तक और दूर तक कायम और जारी रखे, आमीन)

वह शागिरद रशीद हाजी व हाफिज़ वली मोहम्मद रह. कहलाए, जो इस खानदान की नरवर में इक़ात पज़ीर के बाद पहले इस्म बा मुसम्मा वली गुज़रे हैं, उन्होंने अपने ही क़िले नुमा घर में एक मदरसे की बुनियाद डाली और कई लोगों को हिफ़ज़ कराया, खुद साहिबे अवलाद नहीं थे, भाइयों के दरमियान सिर्फ़ एक बेटी थी तो उस भाई की बेटी को हाफिज़ा बनाया, फिर अपने नवासे रियाज़ एहमद को हिफ़ज़ कराया, फ़ारसी में मसनवी की तकमील कराई, साहिबे निसबत बनाया, मज़ीद ताअलीम के लिए गवालियर से आगे इटावा भैजा, जहां उनहोने शरह वक़ाया की तकमील की, हिदाया के कुछ हिस्से पढ़े और खास तौर पर फ़राइज़ की ताअलीम हासिल की, वालिद साहब रह. के वह दादा यही हैं, जिनके बारे में वालिद साहब ने लिखा है कि उनकी इबादत व रियाज़त को अगर मेने अपनी आँखों से ना देखा होता तो बुर्जगों की इबादतों के क़दीम वाकिआत को तसलीम करने में तज़बज़ुब रहता।

वालिद साहब के वालिद बुर्जगवार हाजी मोहम्मद मुख्तार एहमद साहब रह. जो अपने वालिद के बड़े बेटे थे, बचपन हि में वालिदा के सायाए आतिफत से मेहरूम होगए, दादी ने परवरिश की और वह चूंकि खुद हाफिज़ा थीं उनहोने खुद पोते को हिफ़ज़ कलामुल्लाह कराया और वह सब मुनतक़िल करदिया जो उनहोने

अपने चचा जान हाजी वली मोहम्मद साहब रह. से हासिल किया था, उनकी विलादत यकुम रमज़ान 1330 हि. मुताबिक़:14 अगस्त 1912 ई. को और वफात 26 जमादिस्सानी 1425 हि. मुताबिक़ 13 अगस्त 2004 ई. को हुई, हाफिज़ मुख्तार एहमद पेश के एतबार से इब्तिदाअन रियासती हुकूमत में पेश कार थे, लेकिन बड़े ज़ाकिर व शागिल, कसरत तिलावत में बे मिसाल, मअमूलात के बहुत पाबंद, उल्मा नवाज़, इल्म दोस्त, बुर्जगों की सोहबत के शेदाई और बड़े बागो बहार आदमी थे, वालिद माजिद (हज़रत मोलाना जुलफिकार एहमद साहब रह.) खुद फरमाते थे हम ने जब से होश सम्भाला अपने वालिद को तहज्जुद और दिगेर मामूलात का पाबंद पाया ।

मुलाज़िमत की वजह से नरवर से चालीस किलो मिटर दूर तहसिल करेरा में मुकीम थे, जहां एक बैटी के बअद 13 ज़ि कअदा मुताबिक 14 दिसम्बर 1940 ई. बरोज़ सनीचर को एक सआदत मंद बेटा पैदा हुआ, वालिद बुर्जुगवार ने उसका नाम जुलफिकार रखा, कुछ अरसा बाद वतन वापसी हुई और नरवर ही में इक़ामत पज़ीर हो गये, दो ख़ालाएँ भी इस मोहल्ले में रहती थीं इस लिए वालिदा और खालाओं की पुर शफ़क़त आग़ोष में परवरिश होती रही ।

चार साल की उम्र से नाज़रा कुरआन पाक पढ़ना शुरू किया, वालिद साहब रह. के दादा हाफिज़ रियाज़ एहमद साहब रह. एक हद तक आलिम थे फारसी ज़बान में बहुत महारत रखते थे, कुरआन करीम की तकमील के बाद उनसे उर्दू और फारसी की किताबे पढ़ीं, ये सिलसिला अभी जारी ही था कि मुल्क के हालात ने एक बढ़ी करवट ली, अंग्रेज़ी इक़तिदार की बिसात उलट गई, मुल्क ज़बानी तौर पर आज़ाद हुआ, तक्सीमें हिन्द व पाक का एक सैलाब बला ख़ैज़ आया, उसने लाखों की आबादी को दरहम बरहम करके रख दिया, लाखों अफ़राद बेघर हो गये, हज़ारों इस हाल में दुनिया से सिधारे कि ग़ौर व कफ़न भी उनको परदा पोशी के लिये न मिल सके एक हो का आलम था और हर तरफ सरा सीमगी फैली हुई थी ।

ग्वालियर में तआस्सुब उरूज़ पर था, शहर उसके अतराफ से मौहल्ले के मौहल्ले खाली हो रहे थे, नरवर भी इस सूरते हाल से ग़ैर

मुतआस्सिर न रहा, और मेरे दादाजान यानि हाफिज़ मुख्तार एहमद रह. ने अपने छोटे से खानदान जो एक बेटी और तीन बेटों जुल्फिकार एहमद, इक़बाल एहमद और नो मौलूद फरीद एहमद पर मुश्तमिल था, को लेकर यहाँ से रियासत हैदराबाद हिजरत की, (जो उस वक्त आज़ाद रियासत थी) और औरंगाबाद आकर कियाम किया ।

इलाके के हालात कुछ बेहतर होने और देहात में फिरका वराना तनाव के असरात कम होने पर वालिद साहब रह. के बड़े मामू इब्राहीम सा. मरहूम (जिनके बाब में वालिद सा. फरमाते थे कि हमने बड़े मामू में ख्वाजा अबू तालिब की फिदाइयत की झलक देखी है) अपनी बहन और बच्चों को वालिद साहब की ननिहाँल "मलघन" ले आये, जो नरवन से 50 किलोमीटर पर था, कुछ ही दिन गुज़रे थे कि गाँव के बच्चों में खसरे की वबा फैल गई, जो इस दौर में चेचक के नाम से जान लेवा बीमारी थी, उससे ये नौ वारिद खानदान भी मुतास्सिर हुआ, और हाँफिज मुख्तार एहमद साहब का दूसरा बेटा खसरे के मर्ज में मुबतिला होकर चार—पाँच ही रोज़ में इस दुनिया से इस तरह चल बसा कि परदेश में मुहाज़रत की जिंदगी गुज़ारने पर मजबूर बाप नमाज़े जनाज़ा भी न पड़ सका, हालात की शिकार वालिदा इस हादसे से जिस कद्र गमगीन होंगी उसका अंदाज़ा तो एक माँ ही कर सकती है ।

जॉनिसार भाई मोहम्मद इब्राहीम ने जो इन सब को यहाँ से लेकर आये थे ढारस बंधाई, अभी इस सदमें से उभरने भी न पाये थे कि बड़े बेटे जुल्फिकार एहमद को भी खसरे का मर्ज लाहिक़ हो गया और सात साल का बच्चा मौत व हयात की कशमश का शिकार सदमात से टूटी माँ की गोद में लेटा हुआ था, मामू पर इस बीमारी का बहुत गहरा असर था कि बहनोई को मैं क्या जबाब दूंगा, मैं अपनी जिम्मेदारी पर बच्चे यहाँ ले आया था कि मामून रहेंगे, मगरिब का वक्त हुआ चाहता था मामू का भी एक सात साल का सेहत मन्द बेटा अपनी माँ का पहलू पकड़े खड़ा था, मामू ने उसे गोद में उठाया और बीमार जुल्फिकार पर से दर्द भरे अन्दाज में उसे ये कहते हुए तीन बार गुज़ारा की ऐ अल्लाह ! अगर तूझे जुल्फिकार की मौत ही मंज़ूर है तो मेरे इस बेटे को उसके बदले

में उठा ले और जुलफकार को ठीक कर दे, शायद ये वक्त ए मुस्तजाब था, दुआ कुछ ऐसे सच्चे दिल से की गई के कुबूलियत के दर खुलते चले गये, रात ही उस लड़के को शदीद बुखार आया और तीसरे रोज़ वह जॉबहक हो गया और उसके इंतकाल करते ही बहन का बेटा जुलफकार ठीक होना शुरू हो गया, दो तीन रोज़ में वह बिलकुल सेहतमंद था ।

वालिद साहब रह. के चेहरे पर उस खसरे के निशानात थे, फरमाते थे ये खसरे के नहीं उस कुर्बानी के निशानात हैं , जिनमें हमने अबु तालिब की झलक देखी, 1948 ई0 में दादाजी की औरंगाबाद से वापसी के बाद नरवर मुसतकिल क़्याम हो गया, दादाजी तहसील में पटवारी हो गये और वालिद साहब को स्कूल में दाखिल करा दिया गया, तालीम जारी ही थी कि सन् 1955 ई0 में जब वालिद साहब रह. 13 साल कुछ महीने के थे, सद्मात्, हालात और अमराज़ से चूर वालिदा ने भरी जवानी में ही बच्चों को अल्लाह के हवाले छोड़ आखिरत का सफर किया ।

लड़कपन की उम्र में अचानक होने वाले इस हादसे ने बच्चों को बेदम करके रख दिया था, अभी वे माँ की ममता ही को रो नहीं पाये थे कि दूसरे साल सन् 1956 में इकलौती बहन ने एक मोहलिक मर्ज में भाईयों को अकेला बिलकता छोड़कर मौत को गले लगा लिया, अब घर में कोई औरत नहीं थी, ममता को तरसती आखें बहन का जनाज़ा देखकर खून के आंसू बहा रहीं थीं, घर खाने को दोड़ता था, दुनिया बेरंग और बेमज़ा हो गई थी, वालिद साहब रह. के दिल पर यही वह ज़र्बदस्त चोट लगी थी, जिसने उन्हें शफक़तों का पेकर और दुर्रें यसीर बना दिया था ।

उन्हे हर बड़ी बूढ़ी के पेकर में माँ की ममता नज़र आती थी, और माँ बाप को छोड़कर आने वाले हर बच्चे के पेकर में वह अपनी और अपने छोटे भाईयों का दर्द यसीरी देखते थे, यही वजह थी कि वह अपने हर शार्गिद बल्कि हर मुतआल्लिक के लिये एक मुरब्बी, एक उस्ताज़, एक रूहानी बाप, के साथ—साथ एक माँ की शफक़त रखते थे, हज़ारों आँखें आज उसी शफक़त पर अशकबार हैं, इन्दौर में डॉ0 आसिफ साहब की वालिदा के इन्तकाल पर ताज़ियत के लिये जाना हुआ, देर तक रोते

रहे, फिर फरमाया : हमारी माँ हमें बचपन में छोड़कर इस दुनियाँ से रुखसत हो गई थीं, जब भी किसी की माँ के इन्तकाल की खबर सुनता हूँ, मुझे अपनी माँ की वफात याद आती है, गुजिस्ता साल अपनी वालिदा के तरफ से राजस्थान में एक भेड़ की कुर्बानी कराई, फरमाया कि इस पर बाल बहुत होते हैं, मेरी माँ को सबाब बहुत मिलेगा ।

हवादिस कि इस घंघौर घटा में सुन्नते इलाही के मुताबिक रहमते रब्बानी का हिलाल चमका और यहीं से उनके इरतका का बाब कुछ इस तरह शुरू हुआ, सन् 1954 से वालिद गिरामी के दादा हाजी रियाज़ एहमद साहब रह. ने उन्हें दोबारा फारसी पढ़ाना शुरू कर दिया था, कशीमा, पन्दनामा, गुलिस्ता, बोस्ता, दीवान और मस्नवी का कुछ हिस्सा इन हवादिस में भी उन्होंने पढ़ा दिया ।

इधर एक आलिम “फानी हरपालपुरी” यहाँ बड़े मकबूल वाइज़ के तौर पर तशरीफ लाते थे, दादाजान हाफिज़ मुख्तार एहमद साहब रह. अपने इल्म दोस्ती की वजह से उन्हें अपने ही घर क़याम कराते, बड़ी खिदमत करते, बयानात का नज़म करते, इसी दर्मियान ग्वालियर के एक सफर के दौरान मालूम हुआ कि हज़रत मौलाना हुसैन एहमद मदनी रह. आगरा तशरीफ ला रहे हैं, ग्वालियर से आगरा करीब था, दादाजान अपने बाज़ साथियों के साथ नियाज़ मन्दाना आगरा हाज़िर हुये और वहीं हज़रत मदनी रह. के दस्तेहक नवाज़ पर बेअत की, विदाई मुलाकात के वक्त मुसाफा करते हुये हादसात से चूर, तीन यसीर बच्चों का वालिद अपने शेख के सामने फूट-फूट कर रो पड़ा, दुआ की दरख्वास्त की ।

तेरे इश्क में कोहे ग़म उठा ही लिया जो हो सो हो
ऐश व निशाते ज़िन्दगी भुला ही दिया जो हो सो हो

फरमाने वाले हज़रत मदनी रह. तो सब्र व इस्तिक्लाल का हिमाला थे, हालात को बागौर सुना और फिर फैसलाकुन अन्दाज़ में फरमाया : आप अभी अपने बड़े बेटे जुलफकार को देवबंद मदरसा में लाकर दाखिल कर दें, दादाजान के अर्ज किया : हमारे इलाके में इस तरह का कोई माहौल नहीं है, लोग समझेंगे कि माँ के मर जाने के बाद

उन्हें सभाल न सका तो यतीम खाने में डाल आया, इसके अलावा देवबंद बहुत बड़ी जगह है, मैं दूर दराज़ इलाके का फकीर, मेरा बच्चा वहाँ कौन दाखिल करेगा, और इतने बड़े बड़ों में वह कैसे रहेगा ? हम देहाती लोग हैं, बच्चा स्कूल में आठवीं जमात में पढ़ता है, आप दुआ फरमा दें, हज़रत मदनी रह. ने फरमाया : इम्तिहान दिलाकर देवबंद ले आओ, दाखिला हो जायेगा, आप हमारे मेहमान रहेंगे, लोगों के कहने से न डरो, अल्लाह के दीन के लिये वक्फ कर दो, हज़रत रह. ने उसका एहद लिया और ढेर सारी दुआएँ देकर रुखसत किया, दादाजान नरवर वापस आ गये और दिन रात इसी शश व पंज में थे कि अब क्या करें ? समाज का मुकाबला करके हज़रत मदनी रह. के हुक्म की तामील करें या जो तालीम जारी है जारी रहने दें ?

हज़रत मदनी रह. आगरा से देवबंद तशरीफ ले गये और उस वक्त के दारुल उलूम के मोहतमिम हज़रत कारी मोहम्मद तैयब साहब रह. से फरमाया : दारुल उलूम के रोज़े अब्बल से आज तक ग्वालियर के इलाके से कोई तालिबे इल्म नहीं आया, अब हमने मुख्तार एहमद नामी एक शख्स को अपना बच्चा लाने के लिये कहा है, वो देवबंद की अज़मत से सहमें हुये हैं, देहात के रहने वाले हैं, आप इस पते पर पेशगी मंजूरीनामा इरसाल करे दें: ताकि उन्हें हिम्मत भी हो और हौसला मिले, दादाजान अपने कमरे में तहसील के कागजात खोले हुये थे, इस दर्मियान डाकिया ने एक खत लाकर दिया, दारुल उलूम के लेटर पेड पर दारुल उलूम के मोहतमिम के दस्तखत से मुज़य्यन सआदत मन्द जुल्फिकार एहमद के दाखिले का पेशगी मंजूरीनामा देखकर एक देहात के रहने वाले शख्स का दिल खुशी से लबरेज़ हो गया, डबडबाती आँखों से पूरा खत पढ़ा और उसी वक्त बेटे को अल्लाह के दीन के लिये वक्फ करने का अज़मे मुसम्मम कर लिया, वालिद साहब फरमाते थे आज भी वह खत हमारे घर में महफूज़ है, खुदा करे इस आजिज़ की उस खत तक रसाई हो, वालिद साहब रह. को मेट्रिक का इम्तिहान दिलाकर नतीजे का इन्तज़ार किए बग़ेर ही सन् 1957 में देवबंद लेजाया गया, जहाँ दादा जान के साथ दो तीन रोज़ हज़रत मदनी रह. के मेहमान रहे और उनकी वापसी के बाद भी आठ रोज़ तक हज़रत रह. के दस्तरखान

के खोशा चीं रहे, जो यकीनन उनके लिए बड़ी सआदत थी ।

दादाजान के इस सफर के रफ़ीक़ मेरे एक नाना सय्यद बरकत अली मरहूम सुनाते थे कि मुझे अच्छी तरह याद है, जब हाफ़िज़ मुख्तार एहमद साहब रह. जुलफ़कार को देवबंद में छोड़कर वापसी का मुसाफ़ा हज़रत मदनी रह. से कर रहे थे, हज़रत मदनी रह. ने फरमाया: छोड़ जाओ, इन्शाअल्लह यह बच्चा पढ़ेगा, और बड़ा बनेगा, वाकिअ इस बच्चे ने पढ़ा और इतना पढ़ा कि सारी ज़िनदगी इसी में गुज़ारदी मरजुल वफ़ात से पहले चार रोज़ तक मुसलसल हदीस व शुरुह हदीस का मुताला करते रहे, हस्बे मामूल दफ़्तर तक ना आए, किसी को किया मअलूम था कि वह अपने हिस्से की पढ़ाई की तकमील फरमारहे हैं ।

देवबंद में दाखिले के बाद अज़माइशों का नया दौर शिरू हुआ दादाजान की तनखाह मेहदूद, इसी में घर में दो छोटे भाई, घर का खर्च और वालिद साहब के इखराजात, मेहदूद रक़म ही जाती थी, साल में दो जोड़ कपड़े बनते थे, वह भी आखिर में अपने अंजाम को पहुंच जाते, यह मअमूल सारी ज़िन्दगी रहा, दो जोड़ों से ज़ियादा ना बनवाते, अगर कभी बनजाते तो अगले साल नागाह करते, दाखिले मुसततीअ की हैसियत से था, उधर किताबें खरीदने का आबाई शोक़ था, फिस के पेसे किताबों की नज़र होजाते तो चने खाकर गुज़ारा करने की भी नोबत आती रही ।

वालिद साहब रह. ने चार साल फारसी अपने दादाजान हाफ़िज़ रियाज़ एहमद साहब रह. से पढ़ी थी, इस लिए दारूल ऊलूम में इब्तिदाई दरजात में दाखिले के बावजूद जलद ही अगली किताबें पढ़ने का मोका मिलगया; चूंकी स्कूल से हिन्दी, हिसाब वगैरा पढ़कर गये थे वहां जिन उस्ताद के पास हिन्दी, हिसाब के असबाक़ थे, उन्होंने यह देखकर की यह स्कूल से पढ़कर आया है, फरमाया:में इस घंटे में अपनी तिलावत किया करूंगा, तुम जमाअत के तलबा को हिन्दी, हिसाब, पढ़ादिया करो, इसकी वजह से वालिद साहब रह. के हम जमाअत आपको "गुरुजी" कहा करते थे ।

एक मर्तबा शदीद गर्मी में घर से देवबंद का सफर किया, दोपहर की चिल्लिाती धूप में दारूल ऊलूम पहुंचे की अचानक आखों की बिनाई जाती रही, मदरसे का एक तालिब इल्म घर से मदरसा पहुंच कर

अचानक बसारात खो बैठे, उसपर किया गुज़रेगी ?लेकिन होसला षिकन मसाइब हि की छाती से दूध पीकर परवान चढ़ने वाले लोग अज़म व हिम्मत के साथ तुफानी ज़िन्दगी का मुक़ाबला करते हैं, आपने कुछ देर बैठ कर सोंचा और फिर कमरे के एक सांथी के सहारे हज्जाम के यहां पहुंचे, उस से उस दौर के उसली ठंडे तेल की देर तक मालिश कराई, रहमत ईज़दी शामिले हाल थी बसारात ऊदकर आई, जो गरमी की शिदत से मुतअरिसर होगई थी ।

एक दिल चस्प वाकिआ

तहतानी दरजात के एक मोअम्मर उस्ताद जो हज़रत मदनी रह. से वाबिस्ता होने की वजह से दादा जान से अलेक सलीक रखते थे, वालिद साहब रह. ने उनकी बहुत खिदमत की, खुद फरमाते थे: में उनकी माजुरी के ज़माने में का़रोरह फेका करता था, और रोज़ाना खिदमत में आना जाना था ।

इलाक़ा से एक साहब ने अपना बच्चा भी दारुल ऊलूम पढ़ने भेज दिया था, हम इलाक़ा होने की वजह से वह वालिद साहब रह. के साथ रहता, उसने चोरी की, जिसका वालिद साहब पर गेहरा असर हुआ, उसका इख़ाज़ किया गया, और दौराने ताअलीम वालिद साहब रह. को उसे घर छोड़ने आना पड़ा, किराया पास नहीं था, सोचा अपने मखदूम से किराए की मिक्दार तेरह रूपए कर्ज ले लेते हैं वापसी पर अदा करदेंगे, दोपहर कमरह जाकर मखदूम से अर्ज किया : हज़रत ! तेरह रूपए कर्ज चाहिए, एसे हालात पेश आगए हैं वापसी पर अदा करदेंगे, उन्होंने फरमाया : कर्ज चाहिए तो कागज़ क़लम लाओ, पहले लिखो : "मुझे इस तारीख को इस दिन इतना कर्ज फला साहब से चाहिए और फलां तारीख तक में अदा करदूंगा" ।

यह जुमला एक गय्यूर शख्स के लिए बिज़ली के झटके से कम नहीं था, दिल मसोस कर रह गए, आखें आबदीद होगई, मखदूम का हुक्म था, लिखना पड़ा, पेसे की वसूली हुई और सफर शिरू हो गया, पहले उस लड़के को अपने घर पहुंचाया, फिर खुद घर पहुंचे और फोरन दादाजान से पैसा लेकर उसी वक्त मखदूम के नाम मनी ऑडर करदिया, दस रोज़ बाद वापसी हुई, दो पहर का खाना लेकर मखदूम के

कमरे में हाज़री दी, सलाम व दुआ के बाद फरमाया : वह जो कर्ज लिया था वापस करो, अर्ज किया : हज़रत ! वह तो हमने घर पहुंचते ही मनीऑर्डर से भेज दिया था, फरमाया रसीद दिखाओ : रसीद पास ना थी, शर्मिन्दगी से चेहरा जर्द हो रहा था, बहुत मोहतात आंसू आखिर झलक हि पड़े मखदूम ने फरमाया: बेटे ! तेरा मुझ से जो तअल्लुक है, यह तेरह रूपए इसमे कोई मानी नहीं रखते, मेने उसी रोज़ यह निय्यत करली थी कि मैं यह पैसे वापस नहीं लूंगा, लेकिन मे तो यह देख रहा था कि दिन रात कुरआन व हदीस व फिका पढ़ने वाले कुरआन के अहकाम से इतने दूर हैं कि अगर इन्हें उस पर अमल कराया जाए तो उनको ग़रत आती है कुरआन में तो अल्लाह ताआला ने फरमाया "याअय्युहल्लजीना आमनूं इजातदायनतूम बिदेयनिन इला अजल्लिम मुसम्मा फकतुबूह" मेने उसी पर तो अमल कराया था?तुझे इतना बुरा कियों लगा?इस वाकिओ को वह ज़िन्दगी के बड़े कीमती सबक के तौर पर बार बार बयान फरमाते थे ।

इस वाकिअ ने उनकी ज़िन्दगी में कमाल दर्जा मआमलात की सफाई पैदा करदी थी, अगर किसी का पैसा बाकी है तो वह ऐसे बेचैन रहते थे गोया वह बीमार है और उन्हें उसकी दवा पहुंचानी है, फिर ज़िन्दगी का उन्होंने यह एक उसूल बना लिया था कि कभी कर्ज नही लेते थे, गुज़रात में इतना लंबा अर्सा गुज़ारा ज़िन्दगी के अकसर अदवार जवानी से वफात तक वहीं गुज़रे, लेकिन कर्ज से उन्होंने बहुत इजितनाब किया, अपने करीब तरीन लोगों से भी कर्ज लेने बचते थे, फरमाते थे "कर्ज मोहब्बत की केची है" इदारह से 43 साल वाबस्तगी रही, लेकिन वहां से भी कभी कर्ज के तौर पर कोई रकम नही ली ।

दोराने तालीम एक मरतबा रात में तिपाई पर दाई हाथ की कोहनी रखे हुवे मुताला में मुनहमिक थे, नींद के शदीद झोंके से कोहनी ज़मीन से शिद्वत के साथ जा टकराई, इब्तिदाअन दर्द रहा, बड़ते बड़ते उसने एक मोहलिक मर्ज हडडी की टीबी की शकल इख्तियार कर ली, इसी तकलीफ में मिशकात शरीफ का इम्तहान देकर घर वापसी हुई, डॉक्टरों ने एक साल मुसलसल इलाज़ और आराम का मशवरा दिया, इस तरह जिस जमाअत में मिशकात शरीफ तक तअलीम हुई थी वह

एक साल पहले फारिग हो गई, वालिद साहब ने दोरह हदीस एक साल बाद आकर मुकम्मल किया।

दादाजान मदारिस की दुनिया और उसकी तअलीम से यकसर ना बलद थे, उनके रुफका ने यह बात ज़हन नशी करादी कि अब इस मोहलिक मर्ज़ से निजात के बाद जुलफकार एहमद को पढ़ने ना भेजें, वरना दोबारा मरीज़ हो जोएगा, वालिद साहब रह. की ज़िन्दगी में यह एक ही वाकिआ है कि उन्हें दोरए हदीस शरीफ की तकमील के लिए दादाजान की राय के अलरगम देवबंद जाना पड़ा।

दादाजान की शदीद नाराज़गी का असर वहां की ज़रूरियात पर भी पड़ा, बहुत तंगी में साल गुज़रा, इस शेदाइ ए हदीस ने इल्म हदीस के लिए यह सब कुछ खुशी खुशी बरदास्त किया और वक़्त गुज़रने के साथ तदरीस की इब्तिदा हो जोने पर दादाजान को भी मनाहि लिया, अगर इस से पहले कोशिस करते तो शायत इख़्वाजात के खातिर मनाने का शुभा होता जो इस गय्यूर शेदाइ ए हदीस को गवारा ना था।

दोराने तालीम एम.पी के अकाबिर उल्मा में उनका ज़ियादा तअल्लुक साबिक काज़ी शहर भोपाल हज़रत मौलाना आबिद अली वज़दुलहुसैनी साहब रह. से रहा, कई सफर और कई कई रोज़ कियां सिर्फ़ उनसे मुलाकात और सोहबत के लिए हुआ, उन्होंने फिकह में महारत की तरफ तवजोह दिलाई, फरागत के बाद इफ़्ता का भी मशवरह दिया, लेकिन वालिद साहब का रुजहान हर फन से मुनासिबत रखना का था, जिसे बाद में मुसतफिदीन ने ज़रूर मेहसूस किया होगा, वही इस से मानेअ बना, उनके इशारे पर दौराने तालीम हि वालिद साहब को एक मदरसे की शूरा में शामिल करलिया गया, तीन चार मरतबा शूरा की मजालिस में दौराने तअतील शिरकत हुई, एक मर्तबा सख़्त सर्दी थी ठंडे पानी से तलबा के चहरे और हाथ पैर फट रहे थे, उनकी हालत काबिले रहम थी, एक मेहमान आए हुवे थे, उनके सामने शूरा कोई तअमीरी मनसूबा पेश करने जा रही थी, वालिद साहब रह. ने फरमाया : उन तलबा के लिए गरम पानी का नज़म पहले ज़रूरी है, तलबा की ज़रूरत व सहूलत को अवलियत दी जानी चाहिए, उस मेहमान ने भी ताईद की, पस फिर वहां से शूरा में शिरकत का दअवत नामा नहीं आया, वालिद

साहब रह. बादमे कई मदारीस के सरपरस्त और बाअज़ की शूरा में शामिल रहे, सर्दी के मोसम में जहां तल्बा की ऐसी हालत पर नज़र पड़ती तो अरबाबे मदरसा को अपना यह वाकिआ ज़रूर सुना देते ।

इस दौर में दारुल ऊलूम का शायद हि कोई तालिब इल्म ऐसा हो जो हज़रत मौलाना अंज़रशाह रह. की तलाक़ते लिसानी, अंदाज़े बयान में नुदरत, दरसी निकात और बागो बहार तर्ज खिताब से मुतअरसिर ना हो, वालिद साहब रह. को भी हज़रत शाह साहब की खुसूसि शफक़तें और बाज़ आदात की वजह से एअतमाद हासिल रहा, ताअलीम के ज़माने में वह शाह साहब के बयान की हू बहू नक़ल करते थे, बयान वालिद का होता अंदाज़ शाह साहब का:लेकिन ज़मान ए तदरीस में यह वतीरह बाकी नहीं रखा ।

सन् 1967 में दोरए हदीस शरीफ से फरागत के बाद ताअलीम जारी रखने का इश्तियाक़ दोबारा देवबंद ले गया, अभी कुछ रोज़ हि हुए थे कि एक रात खुवाब देखा:कोई कह रहा था कि जुल्फ़िकार गुज़रात में एक मदरसा है जिसे एक ही शख्स चलाता है वह बुलाएँ तो चले जाओ और वहीं के हो कर रहो, दुसरे दिन दारुल ऊलूम फलाहे दारैन के जोहर शनास मोहतमिम हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह साहब कापोदरवी दामत बरकातुहू देवबंद पहुंचे, जिन्हें मुतवस्सितात के लिए एक ऐसे उस्ताद की ज़रूरत थी सालहियत के साथ साथ ज़बान व क़लम की सलाहियतों से आरास्ता हो, बाअज़ असातज़ा और तलबा की निशान दही पर वालिद साहब तक रसाई हुई, और क़ारी असगर अली साहब रह. के मकान में हज़रत मौलाना अरशद मदनी रह. की मौजूदगी में दोनों की मुलाकात हुई, अपने गुज़िस्ता खाब और मदनी खानदान के इकराम में अजनबी जगा के लिए अजनबी लोगों से होने वाला मुहायदा बिल शर्त तमाम हुआ, मुतवक्कल मिज़ाजी ने ना किताब की बात होने दी ना मुशाहिरह की, और आज ही नही ता दमे हयात कभी इस पर ज़बान ना खुली, सिर्फ़ इतना अर्ज किया कि मुझे एक बार घर हो आने दें, लेकिन मौलाना अब्दुल्लाह साहब के ईमां पर मौलाना अरशद साहब का हुक्म इस से भी मानेअ रहा, और मौलाना अब्दुल्लाह साहब की मईय्यत में यह ग़रीबुल वतन गुज़रात का ऐसा राही हुआ कि फिर 6 अपरेल 2010 को

जनाज़ह हि लोटा ।

उनकी तहरीर के मुताबिक 13 फरवरी 1967 पीर के रोज़ तरक़ेसर में हाज़री हुई, एक सो पचास रूपए मुशाहिरह मुक़र्रर हुआ, शरह वक़ाया व दिगर कुतुब का दरस मुतअल्लिक हुआ, मदरसे दूर एक मकान रिहाइश के लिए मिला, जिस में मुसलसल सतरह साल तनहा मुक़ीम रहे, अपनी वसअत के मुताबिक तदरीस के इब्तिदाई ज़माना, सन् 1968 में हुसेनी सादात के ख़ानदान में अपनी खाला ज़ात बहन से इन्तहाई सादगी के साथ अक़द निकाह करके सन् 1954 में वालिदा माजिदा और हमशीरा के इन्तक़ाल से विरान शुदा घर दोबारा आबाद किया और फिर अल्लाह का शुर्क है कि उसका चिराग़ कभी गुल ना हुआ, वालिद साहब रह. ने छोटे भाई और रिश्ते दारों के लिए घर का दरवाज़ा हमेशा खुला रखने, आइन्दा नस्ल अपनी आबाई तहज़ीब से हम आगोश रहे, इसके खातिर कभी अपनी शरीके हयात को गुज़रात मुनतक़िल ना किया, बसद इस्तिक़लाल तने तनहा आज़माइश का मुक़ाबला किया, हत्ता कि मरजुल वफ़ात से भी तनहाई में हम आगोश हुए और फुरक़त हि में अपने रब्बे हकीकि से जा मिले ।

‘तरक़ेसर’ आकर तदरीसी खिदमात के साथ साथ हमेशा इदारे के दिगेर उमूर भी अंजाम देते रहे, खुद फरमाते थे, में इम्तहानात के परचे रात भर बैठ कर लालटेन की रोशनी में कारबन पेपर लगाकर लिखता था, और जागते जागते कभी रोना आजाता था हाथ में घदीद दर्द होता था, लेकिन कभी इज़हार नही किया, जलसों के लिए तलबा की अच्छे मज़ामीन पर मुश्तमिल तक़रीर की तयारी, नफीस और सही अक़ीदे पर मुश्तमिल बड़े शोअरा के नाअतिया कलाम से मुनतख़ब नाअतें मोका व महल के लिहाज़ से कुरआनी आयात के तुग़रे तयार करना, उन्हें इस्टेज की ज़ीनत बनाना, मग़रीबी तहज़ीब व तमद्दुन ने इस्लाम के जिन अहक़ाम को हदफ़ बनाया है, उनसे मौजूआत का इन्तखाब करके तलबा के सेमीनार मुनअक़ित करना, तलबा में तहरीरी ज़ो़क़ पैदा करना, रातों को जाग जाग उनके मक़ालात की तसीह करना, बसलाहियत तल्बा को उसके लिए ज़हनी तौर पर तयार करना, तक़रीरी मुक़ाबले कराना, इसके लिए तयारियां करना, उनके मेहबूब मशग़लों में शामिल थे,

सालाना इम्तहान के बाद तल्बा में मुतले का जोक पैदा करने के लिए बतारे इन्आम किताबें तकसीम होती थीं, मुख्तलिफ नाशरीन की फहरिस्त मतबूआत से हर दर्जा के तल्बा की इस्तेअदाद के मुताबिक उनके लिए कुतुब का इन्तखाब करना, सालाना जलसे की तयारियां कराना और इसे इदारे की इज्जत बना कर पेश करना, हर साल सालाना रिपोर्ट तयार करना, मेहमानों में इदारे का तअरुफ कराना, कहीं कोई वफद इदारे की तरफ से जाए और वह शामिल हों तो बहुत ही जुम्मेदाराना अंदाज़ में इदारे की भर पूर तरजुमानी करना, पूरी दुनिया में फलाही फारीगीन के कामों से बा खबर रहना, उन्हें मश्वरह देना, तदरीसी खिदमात के अलावा यह सब और उसके अलावा बहुत कुछ उन्होंने अपने जुम्मे कर रखा था।

एक मरतबा एक सेमीनार के मोका पर अलील हो गए, दमा की एक किस्म बतारे मर्ज लाहिक थी, इब्तिदाई सर्दी और इब्तिदाई गर्मी में उमूमन उसका हमला होता और तनपफुस की वजह से कभी कभी पूरी रात बैठ कर गुज़ार देते: लेकिन दिन में किसी को इसका एहसास नहीं होने देते, इसका हमला होगया, हम लोगों को भी तषवीष थी, हदीस के एक बड़े उस्ताज़ ने अज़राहे मोहब्बत फरमाया कि मौलाना इतनी मेहनत करके कियों जिन्दगी अजीरत बनाए हुवे हो मरजाओगे तो कोई याद नहीं करेगा, घर आकर फरमाने लगे कि तदरीस की तो तनखा लेते हैं, आखिरत के लिए भी तो करना चाहिए।

एक मर्तबा इशा का वजू करके लालटेन हाथ में लिए गुस्ल खाने से कमरे में तशरीफ लाए, उनके तदरीस के दौर के क़रीबी दोस्त मिलने आए, कहने लगे: मौलाना ! आपके इतने शार्गिद लनदन व अफ़िका वगेरह में हैं, जदीद टार्ज कियों नहीं मंगालेते? बरजस्ता फरमाया : क़ारी साहब ! हम मांगने नहीं आए, फिर बैठ कर फरमाया क़ारी साहब जो खुद से आजाए वह खुदा की तरफ से है, मुतालबा करलिया तो फिर अपने आमाल का उखरवी अज़र कहा जाएगा?।

इब्तिदाई दौर में असातज़ा के दरमियान किल्लते मुशहिरह का शिकवा हुआ और बात यह ते पाई कि मुशहिरह में इज़ाफ़े की दरखास्त

लिख कर ज़िम्मेदारान और खास तौर पर "रावत बरादरान" जो इस इदारे की मुकम्मल किफालत करते हैं, उन्हें दी जाए; चुनान्चे दरखास्त लिखी गई और असातजा ने इस पर दस्तखत फरमाए, वालिद साहब ने इन्कार करते हुवे फरमाया : यह तो बंदों से मुतालबा हुवा, उनके एक इन्तहाई मुख़िस दोस्त जो उस्ताज़े हदीस भी थे, उन्होंने भी दस्तखत नहीं किये, जब दरखुवास्त पेश हुई तो दरखुवास्त गुज़ारों के मुशाहिरा में इज़ाफा करदिया गया, यह दोनो हज़रात अपने कदीम मुशाहिरह पर रह गये।

एक साल से ज़ाइद अर्सा गुज़रा, हमारी सब से छोटी हमशीरा की विलादत का वक़्त था कि जुम्मेदारान की मज़लिस हुई और मुशाहिरह का दफ़तर पेश हुआ, जिस मे इन दो हज़रात का मुशाहिरह सब से कम था, कमी की वज़ह दरयाफ़्त की गई तो बताया गया कि इन्होने इज़ाफे की दरखुवास्त पर दस्तखत नहीं किये थे, हाजी युसूफ साहब रह. ने फरमाया: जिस रोज़ इस सब का हुआ है, तब ही से इन दोनो हज़रात को भी इज़ाफ़ी रक़म अदा की जाए, उसकी अदायगी हमशीरा की विलादत के वक़्त हुई, फरमाते थे कि बच्चियां घर में बरकत का ज़रिआ होती हैं यह उसकी ज़िन्दा मिसाल है।

उनकी अपनी ज़ाती ज़िन्दगी अजीब क़लन्दराना थी, दुसरों को मशवरह देते वक़्त अस्बाब पेशे नज़र रहते थे, अपनी ज़ात के लिए मुआमला बड़ा अजीब था, सब से बड़े बेटे सुहैल एहमद की विलादत सन् 1970 इ0 में हुई, उस वक़्त घर के हालात पेशे नज़र आपने रबीउल अब्बल से शाबान तक की छुट्टी मंज़ूर कराली, घर तशरीफ़ ले आये कुछ रोज़ कियाम करके इलाक़े में फेली हुई बेदीनी को करीब से मेहसूस किया, और तबलीगी जमाअत के अहबाब के साथ मिल कर नरवर में एक इज़ितमा किया, उसके लिए दिहात दिहात का सफ़र किया, खुदा दाद सलाहियतों से बेहदरीन इन्तज़ाम फरमाया, यह इलाक़े का तारीखी कामयाब और सबसे पहला इज़्तमा माना जाता रहा, बस्ती वालों ने दरखास्त की कि आप घर में मूकीम रहतें हैं हम चाहते हैं कि बस्ती के बच्चे आपस इस्तफ़ादा करें, आप बस्ती के मक़तब में कुछ पढ़ा दिया करें, तीन महीने यह खिदमत भी बहुस्ने खूबी अंजाम दी उसी ज़माने

का एक वाकिआ खुद सुनाते थे कि सुहैल की विलादत से दो रोज पहले मेरी जेब में सिर्फ एक रुपिया था, बारिश शदीद थी, जोहर पढ़कर घर आया था कि बूढ़ा शख्स लकड़ी का गट्टर लेकर आया, और कहने लगा इसे खरीद लो मेरे पास शाम में खाने को कुछ नहीं है बारिश हो रही है मैं कहां जाऊंगा एक रुपया देदो मैं आटा खरीद कर घर लेजाऊंगा, वालिद साहब रह. फरमातेथे कि मैंने उससे लकड़ियां लेलीं और वह एक रुपिया उसे देदिया, और दिल में सोंचा अब अपने प्यारे अल्लाह की मदद देखें गें, असर की नमाज़ पढ़ी बाहर निकले मेहल्ले के एक साहब आए और कहने लगे कि फुलां गांव में आज रात आपका बयान है, उन्होंने मुझे मुकल्लफ किया था मैं भूल गयां हुं अब हमें अभी ही चलना है वालिद साहब ने घर के हालात के तहत माज़रत की उन्होंने कहा मेरी इज़ज़त का सवाल है, मेने वादा किया था कि मैं लेकर आऊंगा, वालिद साहब रह. उनके साथ पेतीस किलो मीटर दूर गांव के लिए बस से रवाना हो गए रात बयान हुआ सुबह सवेरे वाप्सी हुई, फरमाते थे मेने घर आकर कुरते की जेब में हाथ डाला तो बीस का नोट था, मैं फोरन रफ़ीके सफर के घर गया कि रात दोनो के कुरते साथ साथ नखे थे मुमकिन हे कि उन्होंने ग़लती से अपने पेसे डालदिये हों, उन्होंने कहा वह पेसे आपहि के हैं फुलां साहब हदिया देना चाहते थे हाथ में देने की हिम्मत नहीं हुई, खामोशी से जेब में डालदिये थे और कहा था कि दरयाफत करने पर बतला दें कि हदिया है वापस ना करें मुझे तकलीफ होगी, वालिद साहब रह. अज़ राहे मज़ाह फरमाते थे कि तब मालूम हुआ कि वेसे अल्लाह एक दस देते हैं बारिश में एक के बीस देते हैं।

फलाहे दारैन की तदरीस के इब्तिदाई दोर में एक मोड़ ऐसा भी आया कि लनदन से एक साहब वहां तदरीस की पेश कश लेकर हाज़िर हुअे वह इतने पुर अज़म थे कि वीज़ा और टिकट साथ ले कर आए थे बे हद इसरार किया कि यहां से मुसताफी हो कर आप हमारे साथ चलें, वालिद साहब रह. के कई रुफ़का से कहलाया जब इधर से शदीद इंकार रहा तो उन्होंने मोहतमिम साहब (मौलाना अब्दुल्लाह साहब दामत बरकातुहुम) को राज़ी किया कि आप सिफारिश करें,

मौलाना जुलफकार सा साहब आपसे मुआहदे की वजह से ग़ालिबन इन्कार कर रहे हैं, मौलाना ने वालिद साहब से बात की कि उनका बहुत इसरार है वहां शदीद ज़रूरत है, यहां तो लोग आते रहें गें आप सोंचलें वालिद साहब रह. ने फरमाया आपको अगर जेहमत हो तो में यहां से अलाहिदा हो सकता हूं, लेकिन मुल्क छोड़कर किसी कीमत पर नहीं जाऊंगा मौलाना खामोश हो गये, वालिद साहब रह. ने सोंचा कि यह टिकट लेकर भी आएं हैं लिहाजा एक ज़ी इस्तेअदाद शार्गिंदे रशीद की नीशान दही की जो कुछ रोज़ फलाहे दारेन में तदरीस कर चुके थे कि उन्हें ले जाएं, उन्हें न हिन्दुस्तान न छोड़ना था न छोड़ा।

अदमे मरऊबियत उनकी मुमताज़ सिफत थी, जिसका असर उनके दरस और बयानात ही नहीं; बलके उनके तरज़ बूद व बास में भी चमकता रहा, किसी मुसन्नफ, मुफस्सिर, शारेह की जलालत शान उन्हें कभी अकली सवालात उठाने और ग़ेर तशप्फी बख़्श जवाबात पर जरह करने से ना रोक सकती, वह हर ऐसे मोका पर पूरी कुव्वत से एअतराज़ उठाते और उसका बरसों तशप्फी बख़्श जवाब तलाश करते, फिर उसे मुसतफिदीन के सामने रखते, बड़ी से बड़ी शखसियात उनके साथ इस्तेज़ पर जलवह अफरोज़ होती, और इदारा में क़दम रंजा फरमा होतीं, उनका जहन व दिमाग़ कभी उनके अबक़रिय्यत से मरऊब ना हो, और यही वजह थी कि जब वह ऐसे झुरमुट में अपनी बात कहते तो हमेंशा दाद व तहसीन वुसूल करते और बाद वाले उनके हवाले देते रहते, गुजरात में तक्रिबन निस्फ़ सदी गुज़रने के बावजूद उनपर गुज़राती ज़बान या तरजे ज़िन्दगी का कोई असर ना हुआ, वह अपनी इस सादगी, देवबंदी लिबास, दिल्ली की टिकसाली उर्दु के साथ रहे, उनकी ज़बान व क़लम की नफासत को कोई चिज़ मुतअस्सिर ना कर सकी; बलके इस से बड़ कर वतन ही का खाने पसंद फरमाते थे, एक मरतबा लनदन से वापसी हुई, घर तशरीफ़ लाए, वालिदा से फरमाया : एक रोज़ लनदन में दसतर खान पर कई किस्म के पुर तकल्लुफ़ खाने रखे थे, लेकिन मुझे वहां अपने घर के दही बड़े याद आ रहे थे, इस से एक तरफ़ जहां वालिदा मोहतरमा की दिलजोई का अंदाजा मालूम होता है, वहीं अपने घर और इलाक़े की मतऊमात की पसंददीदगी और किस्महा किस्म और

रंगा रंगी से अदमे मरऊबियत का भी अंदाज़ा होता है ।

उन्होंने अपनी अमली जिन्दगी की शिरूआत एक अज़नबी इलाके से की थी, और अदमें मरऊबियत की शान पाई थी, तदरीस के इलावा और कई अशग़ाल अपने जुम्मे ले लिए थे, इस मुहबिते एअतराज़ बनजाना अमरे फितरी था, उनके रुफ़का, अहबाब, मआसिरीन, सभी उन्हें अपनी दोस्ताना व आलिमाना तनकीद से बालातर ना रख सके, जिस से मेहफूज़ रहने के लिए उन्हो ने एहतियात का औज़ कमाल तलाश करलिया था, हर मामले में सब से पहली फ़िक्र यही रहती कि इस पर किसी सिम्त से कोई तनकीद ना आ सके, इस खयाल ने उनकी शख़सियत, मशवरह, फ़ेसले तहरीर और तक़रीर में ग़ायत दरजे का इस्तहक़ाम और निखार पैदा कर दिया था ।

उन्हें जब किसी मौजू पर बोलना होता तो उसके इतनी मज़बूत तयारी होती कि उनका खुतबा उस मौजू पर शाहे कलीद बनजाता, यही हाल तहरीर व दरस में होता, पूरी कोशिश होती कि किसी नाकिद के लिए उंगली रखने या गिरफ़्त करने की मजाल ना रहे, उनका फ़ेसला बहुत मोहतात होता, जिस में सिक्के के दोनो सुख पेशे नज़र रहते, यही एहतियात जब नो जवान रुफ़का व शुरका ए अमल के सामने मशवरह की शकल में आता तो ज़ज़बात से मग़लूब नो जवान रुफ़का इसे डरने और खोफ़ खाने से तअबीर करते; जब कि वह डर नही कमाल उहतियात होता था, और बसा अवकात उनकी राय की गहराई से सर्फ़ नज़र करते हुवे फ़ेसले लेकर नुक़सानात भी हो जाते ।

इदारे के प्रोग्राम तयार करने में भी यही एहतियात इन्तखाब अनावीन से ले कर तालिबे इल्म के इस्टेज़ से फरागत तक पेशे नज़र रहता कि कहीं कोई छोल ना रह जाए कि हदफ़ तनकीद बनने की नोबत आए ।

इसाबत ए राय

इसी ग़ायत एहतियात और बच बच के चलने ने उन्हें इसाबत राय के अज़ीम मलके का हामिल बना दिया था, वेसे उनका दिल आयने की तरह साफ़ था, और निख्यत नेक थी, जो अल्लाह की तरफ़ से इसाबत के फ़ैज़ान के लिए शर्ते अब्वल है और उसमें शक़ नही कि जो

इदारे मशवरह की हद तक उनसे मुतअल्लिक थे, इस अतिय ए इलाही से वह खूब फैज़याब हुव, बलके जो उनसे मुतअल्लिक हुवा आम या खास आलिम हो या गेर आलिम, शागिद्र हो या ना हो, जिस ने भी उनके मशवरों पर अमल किया, उनकी इसाबत राय से भर पूर फायदा उठाया, और आज मुतअल्लिकीन जिस मता ए गिरानुमाया को गुम पा रहे हैं, वह यही इसाबत राय है कि अब तक हर मसअले में उनसे रूजूअ हो कर सही राय पाते और अमल करके ज़िन्दगी के नशेब व फराज़ में बे धड़क गुज़र जाते थे, अब हमारी कशती के लिए ना खुदा कोन होगा ?

हम दर्दी व ग़म गुसारी उनका खानदानी पेशा था, जो उन्हें अपने बुजुर्गों से बतारे मीरास अता हुआ था, बचपन की यसीरी, कर्दे किफाफ में परवरिश और क़लन्दाना ज़िन्दगी, इल्म नफ़्स में महारत और क़दरत की तरफ से अता शुदा "इदराक" ने इसमें ज़ाज़बिय्यत, मिठास, और ग़ायते कमाल पैदा करदिया था, इनका यही वस्फ था कि जिस के सामने उसके नाकिद और मुखालिफ भी झुक जाते थे, वह हर मुतअल्लिक मुनसलिक के दिल में रहते थे, और उसका दिल टटोल कर उसकी अंदरूनी तकलीफ का इदराक व एहसास करते और फिर अपने सही मशवरों से उनका मदावा फरमाते ।

जो कुछ मुमकिन होता, उसको खामोशी से कर गुज़रते, यही वजह थी कि तल्बा उन्हें मसीहा समझते थे, इन्तजामिया की सरज़निश हो या असातज़ा की नाराज़गी, वह अपना दर्द उनके सामने खोल कर रख देते थे, असातज़ा अपने दिल का हाल सुना कर बोझ हलका करते, किसी की मुलाज़िमत की दुशवारियां हों या तअल्लुकात की खराबी, एहलो अयाल की अलालत हो या समाजी मुश्किलात, वह हर मोड़ पर उनकी ग़म खारी करते और सही राह बतलाते, देसी, और घरेलू इलज़ बतला कर दुआओं से नवाज़ कर मेहगे इलाज़ से बचने की राह दिखलाते, खानगी मसाइल में ऐसे राज़दाराना मशवरो से नवाज़ते कि किसी का मक़ाम भी गिरने ना पाए, और उलझन से आदमी निजात पाले ।

इसके लिए बसा अवकात बाज़ बड़े फ़ेसले लेने का मशवरा देते, और जब मशवरह लेने वाला लड़खड़ाता तो खुद उसका सहारा बनते ।

नादिर तलबा की खबर गीरी फरमाते, उनका खुफिया नज़म

फरमाते, मसाजिद के अइम्मा व मोअज़िनीन, मकातिब के असातिज़ा, दिहात में काम करने वाले हुफ्फाज़ व उल्मा, खुसूसियत से उनके हदाया के मुतअल्लिक रहते, दूर रहकर भी नादिर रिशतेदारों और मुतअल्लिकीन के घरो के अंदरूनी हालात से मकान की तंगी, वसाइल की कमी, अमराज़ का इलाज़, बच्चों की शादियां, हत्ता की सर्दी के कपड़े, ईद का सामान तक से बाखबर रहते, और यह उनकी फिक्रों में शामिल रहता, कितने ही नादार खानदान और उनके घराने के लोग ऐसे थे कि उनके पेर की चप्पल का नाप भी उनके आफज़े में था, अल्लाह अज़्ज़ व जल अपने फज़ल से इस घर के ज़रिए उन सभी लोगों की ज़रूरियात का दायमी तकफ़ील फरमा कर वालिद साहब रह. के सवाब में दवाम अता फरमाएँ।

अहक़र ने नरवर के आखिरी कियाम के दोरान एक मरतबा अर्ज किया कि हज़रत मौलाना अली मियां साहब रह. पर हज़ार हा मज़ामीन शायअ हुवे, हर एक ने अपने एतबार उनकी खूबियां बयान कीं, एक सो क़रीब मज़ामीन अहक़र ने भी पड़े, सिर्फ़ दो मज़ामीन ऐसे थे जिन्हें देख कर लगा कि कुछ तर्जमानी हुई है, फोरन मुतवजह होकर फरमाया, वह किस के थे और उनमें किया बात थी ?

मेने अर्ज किया कि एक तो अंज़र शाह कश्मीरी रह. का मज़मुम था, जिस में उन्होंने ने हज़रत मौलाना अली मिया साहब रह. को खुद तहफिज़ी की सिफत से मर्ज की हद तक मुत्तसिफ़ क़रार दिया था और लिखा था कि हर फिरका और हर जमाअत उन्हें अपना समझती रही, और वह सभी की नज़रों में मोअज़ज़ रहे।

दुसरा मज़मूम हज़रत मौलाना वली रहमानी दामत बरकातुहुम का था, जिस में उन्होंने ने लिखा था कि मौलाना की बड़ी खुसूसियत यह थी कि वह बिलवास्ता ज़बान में बात करते थे, जिस की वजह से वह मोज़ुअ इत्तहाम ना बन सके, जब मुस्लिम कोम पर फिक्री यलगार के साथ अमली वार भी शिरू हो गए तो हज़तर मौलाना ने फतवा ज़िहाद नाही दिया, बलके सीरत सय्यद अहमद शहीद लिखकर कोम के सामने रखदी, जब हमारे ही नो जवान अपनी तारीख से ना वाक़फियत की वजह से अपने बुर्ज़गों, बादशाहों, और खुलफा को हदफे तनकीद बनाने लगे, दुसरो की तारीख पढ़कर उन्हें ब नज़रे तहसीन देखने लगे, तो मौलाना ने उनके खिलाफ कोई महाज़ नहीं खोला, ना कोई बयान दिया,

बल्के तारीख दाअवत व अजीमत लिखदी, जब रह. स.अ.व.स की उम्मत को इन्तहाई बे वकअत बलके इंसानियत की पेशानी पर एक कलंक बना कर पेश करने की यहूदी साजिश वाशगाफ हुई तो मौलाना का हस्सा दिल तड़प गया, लेकिन यहां भी हज़रत मौलाना की बिलवास्ता ज़बान गोया हुई, और आपने अपनी शोहरे आफाक़ तसनीफ़ "माज़ा खसरुल आलिमी बिइनहितातील मुस्लिमीन" लिखी, जब आलम अरब में तसव्वुफ़ की जुम्ला अक़साम से तोहश आम हुआ, और बर्रे स़गीर की अबक़रि शखसियात जो अपनी इल्मी ज़लालत के साथ साथ सिफते एहसान से मुत्तसिफ़ और तसव्वुफ़ की रमज़ शनास थी उनकी निगाहों में मखदुश होने लगीं, और अवाम के साथ इस में खवास भी मुबितला नज़र आए, तो मौलाना जो शैखुल अरब वल अजम थे, ने ना कोई मुबाहिश किया ना किसी ग़ेर काइल को काइल करने की कोशिश की, बलके सिफते एहसान पर एक मुख़तसर मगर जामेअ तसनीफ़ "रब्बानिह ला रोहबानियह" पेश फरमाई, मेने जब इन मज़ामीन का तज़किरह किया तो आपने तहसीन फरमाई ।

मुझे मालूम ना था कि आइन्दा वालिद साहब रह. की इन्ही सिफात को जीनते किरतास बनाना होगा, वालिद साहब को खुद तहफिज़ी में हमने अपनी मिसाल आप पाया, उन्होंने ने अपने आप का बचा कर रखने के लिए अपना सब कुछ तज़ दिया, हर किस्म की कुरबानी दी, लेकिन अपनी शखसियत पर कोई दाग़ ना आने दिया, उनके रब्बे हकीकी ने भी उनकी लाज रखी, और वह अपनी मेहफूज़, हरदिल अजीज़, मेहबूबे खास आम और अपने पराए में मक़बूल, नीज़ सब की नज़रों में मोअज़ज़ शखसियत लेकर इस दुनिया से कुच कर गए ।

दुसरी सिफत उनका बिलवास्ता अमल था, वह हमेंशा अपने आपको पस मंज़र में रखकर काम करने के आदी थे, वह कभी फलाहे दारेन के मोहतमिम नही रहे, और नाज़िमे तालीमात रहते हुवे भी शाज़ व नादिर ही उन्होंने ने किसी कागज़ पर बहेसियत नाज़िम दस्तखत किये हों लेकिन पस मंज़र में रह कर इदारे को मुल्क का मोहज़ज़इदारा बनाने में कार नुमाया अंजाम दिया ।

उन्होंने ने कभी ना कोई मदरसा खोला, ना मस्जिद बनवाई, लेकिन एसे अवामी नुमाइन्दे तलाश किए जो मक़ामी उल्मा के साथ रहकर

मदारिस चला सकते थे, उन्हें तकविय्यत दी, होसला बख्शा, हर मोड़पर उन्हें हर किस्म के तआउन के साथ अवाम में मकबूलियत दिलाई, जामिआ इस्लामिया बंजारी महू इन्दौर, जामिआ मुख्तारुल उलूम सीरपूर बांक, इन्दौर, जामिआ इब्ने अब्बास रजि. गुना, मदरसा इस्लामिया आरवन, वगैरह बहतरे मदारिस व जामिआत और उनके कार कुनान इसकी जिन्दा मिसाले हैं।

कुरआने पाक की ताअलीम के लिए खुद कोई नज़म नहीं किया, लेकिन खादिमें कुरआन हज़रत मौलाना गुलाम मोहम्मद साहब वस्तानवी मद्ज़िल्लहुल आली की भर पूर ताईद की, उनकी कुरआनी तहरीक को मंतिकी दलाइल और ज़हनी, फिक्री, फिकही मआवनत दी, कुरआने पाक की निसबत पर तज़वीद की तरवीज व इशाअत, मकातिब का कियाम हिफज़ कुरआने पाक की तरफ अवामी रूजुअ पैदा करने के लिए उन के हर इज़लास में दूर दराज़ का सफर फरमाकर शिरकत करते और इज़लास में मौलाना वस्तानवी और उनकी तहरीक की भर पूर वकालत फरमाते, फज़ाइल सुनाते, मसाजिद के संगें बुनियाद और इफतिताह के लिए दूर दूर के असफार करते, खुद कभी चंदा नहीं किया, लेकिन मकातिब, मदारिस और मसाजिद के कियाम के लिए अवाम और अरबाबे सुरवत की ऐसी ज़हन साज़ी करते कि वह हमेशा कि लिए उनसे वाबस्ता होकर रह जाते, कितने ही इदारों को उन्होंने ने मुखलिस मुआविनीन इनायत किए, और उसके इलावा बहुत से बिलवास्ता कारहा ए खैर थे, जिनका तज़किरा उनकी वफात हसरते आयात के फोरन बाद मुनासिब नहीं, कोई नहीं जानता था कि उन कामों के पीछे उनकी शखसियत कार फरमा थी, रब्बे करीम अपने खुफिया इनआमात से उन्हें सरफराज़ फरमाएँ।

कसरे नफसी

हर आदमी में कोई वस्फ ऐसा होता है जो उसे अपने रुफ़का व मआसिरीन में मुमताज़ करता है, वालिद साहब रह. की पाकीज़ा और मोहब्बत और मेहबूबियत से लबरेज़ जिन्दगी में इम्तियाज़ी वसफ उनकी कसरे नफसी थी, उन्हो ने कसरे नफसी में अपनी इल्मी व रुहानी जलालते शान को ऐसा छिपाया था कि उनकी ज़ाते आली वक़ार तक अकसर लोगों की निगाह न पहुँच सकी, यही सिफत थी जिस की वजह से 45 साल एक मक़ाम पर रहने के बावजूद कभी किसी से गरम गुफ्तगू

ना हुई, ना ज़िन्दगी में कोई इज्जत नफस का मसअला बन सका, अजीब शान यह थी कि जो उनके खिलाफ होता या दरप ए आज़ार होता, उनकी शफ़क़त व मोहब्बत और हमदर्दी उसके साथ और बढ़ जाती, हर मनफ़ी से वह कोई मुसबत पहलू ज़रूर निकाल लेते थे।

हज़रत मौलाना अली मियां रह. के बाब में किसी ने हज़रत शैखुल हदीस मौलाना ज़करिया साहब रह. को लिखा था कि मुझ से हज़रत मौलाना की शान में गुसताखी हो गई है, अपने दीनवी व उखरवी बुरे अंजाम से डरता हूं, हज़रत शैख ने जवाब में लिखा कि तुम ने गुसताखी भी हज़रत मौलाना अली मियां की शान में की है, जो उफ़व व दरगुज़र के दरया ए ना पैदा किनार हैं, हज़रत वालिद साहब रह. के मुतअल्लिकीन ने उफ़व दर गुज़र के इस दरिया से बार हा सैराबी की होगी, लेकिन ना साकी की पैशानी पर बल देखा, ना जाम व मीना में बाल आया, ना अपनी ज़ात के लिए कोई मुतलबा किया, ना मेहरूमी पर अफ़सोस, बल्के कसरे नफ़सी की इस शान ने उन्हें दुसरों को इज्जत दिलाने वाला मोहसिन बना दिया था, उन्होंने ने अपने नाकिदीन पर इस तरह भी फतह पाई थी कि वह उन की भी इज्जत अफ़ज़ाई करते और अपना मक़ाम तज कर उन्हें मक़ाम दिलाते।

हज़रत मौलाना खलिद सैफुल्लाह रहमानी दामत बरकातुहुम फरमाते हैं कि हम ने मौलाना जैसा खूरद नवाज़ नही देखा, वह उपने छोटों की दिल खोल कर तअरीफ करते, उनकी इज्जत अफ़ज़ाई करते, उन्हें बड़ा बनाने और अवाम में उनकी मक़बूलियत से बहुत खुश होते, चूंकी उन्होंने ने अपनी शखसियत तज रखी थी, इस लिए हर खास व आम की दिलदारी फरमाते, कोई अपनी बात कहता मगर वह हक़ से ना टकराती तो आप उसकी एसी ताईद फरमाते और भर पूर वकालत करते कि खुद काइल दंग रहजाता, छोटा बच्चा हो, बूढ़ी औरत हो, तालिबे इल्म हो, शागिरद हो, या जलीलुल कर्द मआसिर, सभी की दिलदारी करके उनका दिल मूह लेना और सब की सब कुछ बरदाश्त करलेना यह उनही का तर्र ए इमतिyाज़ था।

इसी वस्फे मुमताज़ ने उन्हें इन्तहाई सादाह मिज़ाज, साबिर व क़ानेअ, मेहमान नवाज़, जोहर शनास, उफ़व व सफ़ह का पहाड़, सब का मोहसिन, और उम्मत की खिदमत में फिदाकार बना दिया था, हर एक

से तफसीली गुप्तगू करके उसकी ज़िन्दगी के वाकिआत मअलूम करना और फिर उनसे सबक आमोज़ नतीजा निकालना, अहादीसे तय्यबा और आयाते कुरआनी का उनपर इन्तबाक़ करके इस्लाम समझना और समझाना उनका वहबी मलका था, और इनके इलावा दसयों ऐसे खसाइस हैं, जिन्हें अगर तफसील से लिखा जाए तो एक किताबे ज़िन्दगी तयार हो जाए।

इन सब के साथ साथ तअल्लुक़ मअल्लाह, शब बेदारी, रातों में मुसल सल दो दो घंटे मुनाजात व दुआ, तवज्जोह इलल्लाह, हर अमल में सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने का खयाल, अल्लाह ताआला के अलावा इस कायनात में अपना कोई मोनिस व गमखार नहीं, माअवा व मलजा नहीं, इस का यकीन, रसूल अल्लाह स.अ.व.स से नाज़ भरी मोहब्बत, यह सब वह चीज़ें थीं जो उन्हें मेहबूबियत करने वाले अल्लाह की बारगाह में मकबूल बना रही थीं, बे नफसी के साथ मुसलसल जोहद व अमल, खिदमते दीन, तफहीमे शरीअत, दरस व वाअज़, हम दर्दी व ग़म खारी, अपने मौला की रिज़ा के लिए रातों की इबादत से थके हुवे और बीमारियों से चूर राहे ज़िन्दगी के इस मुसाफिर पर जब रहमते रब्बानी को तरस आया तो अचानक मुहिब्बीन के झुरमुट से उचक कर उसे अपने मेहमान खाने में आसूद ए खाब करदिया, बारे इलाह ! आपके नबी बरहक़ का फरमा बरदार नवासा आपके हुज़ूर हाजिर है, उनकी जफा कशी, नफ्स कशी, इन्सानियत नवाज़ी, खुदा परस्ती, और इशाअते दीने नबी स.अ.व.स की मेहनतों का बेहतरीन सिला नसीब फरमा, और उन्हें अपनी रहमत का वह जवार नसीब फरमा, जो नाना जान के वफा शिआर नवासों के लिए अपने मखसूस फरमा रखा है।

ई दुआ अज़ मन व अज़ जुमला जहां आमीन बाद
और उनके जुमला मुतअल्लिक़न व मुहिब्बीन के लिए उनके साथ तअल्लुक़ और मोहब्बत को ज़खीर ए आखिरत बना दे।

सालों साल यह धरती तेरी फुरक़त पे रोए गी
बड़ी मुश्किल से होगा दहर में तुझसा बशर पैदा

नोट : एक खुश आइन्दा इत्तिलाअ यह है कि वालिद माजिद के उलूम व फुयूज़ की इशाअत के लिए एक मुस्तक़िल

वेब साइट शिरू की जा रही है, जिस पर इन्शाअल्लाह उनके बयानात, व जुमला तसानीफ और दरसे हदीस व मसनवी भी मौजूद होगा, मुतअल्लिकीन से इसतदआ है कि जिन के यहां भी वालिद मरहूम के बयानात मेहफूज़ हों वह हम तक पहुंचाकर इस अमले खैर में शिरकत फरमाएं।

वेब साइट

www.narwari.com

हमारा पता

पलासिया मस्जिद, पलासिया इसकोयर, एम जी रोड़,
इन्दौर, एम.पी

juned313@gmail.com

Mo. 09425072454